International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.11 No.2 Nov-Dec 2023

हबीब तनवीर के नाटकों में अभिव्यक्त बाल संवेदना

डॉ. केशव माधवराव मोरे
हिंदी विभाग
संत तुकाराम महाविद्यालय, कन्नड
Corresponding Author – डॉ. केशव माधवराव मोरे
DOI- 10.5281/zenodo.14627538

सारांश :

बाल नाटककार हबीब तनवीर ने कई बाल नाटकों का लेखन किया हैं, किंतु उनके केवल पांच बाल नाटक ही प्रकाशित है। इन पांच बाल नाटकों में उन्होंने बाल मन की जिज्ञासा एवं कल्पना को मध्य नजर रखते हुए विभिन्न बाल संवेदनाओं को अभिव्यक्त किया है। इन नाटकों में बालकों को साहस एवं वीरता का पाठ पढ़ाया है। बच्चों के सेहत के लिए दूध के महत्व को विशद किया है। चांदी का चमचा इस नाटक के माध्यम से वे बच्चों को एक ओर स्वच्छता का महत्व समझाते हैं, तो दूसरी ओर सामाजिक दायित्व का एहसास भी कराते हैं।

मुख्य शब्द : साहस एवं वीरता, बालमन की जिज्ञासा, दूध का महत्त्व, सामाजिक दायित्व, स्वच्छता का महत्व एवं बालसंस्कार।

भूमिका :

हिंदी बाल नाटककार के रुप में हबीब तनवीर का नाम बडे आदर के साथ लिया जाता है। इन्होंने बाल नाटकों के सृजन के साथ-साथ बाल रंगमंच को लेकर विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन किया है। इस दृष्टि से बाल नाटकों में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। मुंबई की फिल्मी दुनिया को छोड़कर हबीब तनवीर दिल्ली में जर्मन महिला एलिजाबेथ गाँबा के स्कूल में अध्याप के रूप में कार्य करने लगे। यहाँ बच्चों के साथ रहकर उन्होंने कई बाल नाटकों का लेखन किया है। इस दौरान हबीब तनवीर ने बच्चों के लिए अनेक नाट्य प्रयोग किए है । दुध का गिलास, चाँदी का चम्मच, हर मौसम का फूल, परम्परा, आग की गेंद, कारतूस आदि लगभग सात नाटक उन्होंने लिखे और प्रस्तुत किए है। इन्हीं नाटकों में से पाँच नाटक वाणी प्रकाशन से प्रकाशित हुए है । इन पाँच बाल नाटकों में हबीब तनवीर ने बच्चों की मनोदशा, जिज्ञासा, सोच विचार, कल्पना एवं सपनों को प्रस्तुत किया है। इन नाटकों में विभिन्न बाल संवेदनाओं को अभिव्यक्ति मिली है।

साहस एवं वीरता का पाठ :

बाल नाटकों में किसी वीरयोध्दा, पराक्रमी राजा एवं जाबांज सिपाईयों को नायक बनाकर उनकी शौर्यगाथा का चित्रण किया जाता है। वे अपने साहस एवं वीरता के बलपर कठिन स्थिति में भी विजय प्राप्त करते हैं। अंत में असत्य पर सत्य की विजय दिखाई जाती है। जिससे बच्चों के बालमन में साहस एवं वीरता के साथ-साथ ईमानदारी एवं सच्चाई की ज्योत प्रज्वलित हो जाती है। इस संदर्भ में अनुज का कथन है कि, "कहना न होगा कि भारतीय बाल साहित्य आशावाद का साहित्य रहा है, जो बच्चों में आशा के भाव भरता है और उन्हें ऐसी प्रेरणा देता हैं कि वे किसी भी परिस्थिति में कठिण संघर्षों का सामना कर सके।"[1] हबीब तनवीर ने भी कारतूस इस बाल नाटक के माध्यम से बच्चों में साहस एवं वीरता की भावना को जागृत करने का प्रयास किया है। उन्हें आशावादी बनाया है। ऐतिहासिक घटना पर आधारित इस नाटक में नायक वजीर अली के साहस एवं वीरता को प्रस्तुत किया है। वजीर अली अंग्रेजी शासन व्यवस्था को परेशान कर देता है। इसीलिए अंग्रेजी सैनिक वजीर अली को पकडने के लिए जंगल में ही खेमा डाल देते हैं। वजीर अली को जंगल में चारों ओर से घेर लिया जाता है किंतु वजीर अली इस बिकट स्थिति में भी निर्भीक बन अंग्रेजी सैन्य का सामना करने के लिए नयी साजिश रचता है । एक दिन वह खुद भेष बदलकर अंग्रेजी खेमे में दाखिल हो जाता है, उसे कोई नहीं पहचानता, वह कर्नल को कहता है कि मैं वजीर अली को पकडकर लाऊँगा, बस! मुझे कुछ कारतूस दीजिए। "कर्नल : यह लो दस कारतूस।
सवार : शुक्रिया।
कर्नल: आप का नाम ?
सवार : वजीर अली। आपने मुझे कारतूस दिए। इसीलिए आप की जान बख्शी करता हूँ ।"[2] वजीर अली अंग्रेजी खेमे में जाकर उनसे कारतूस लेकर आता है। इससे वजीर अली के साहस एवं वीरता का पता चलता है। साथ ही वजीर अली के देशप्रेम, आशावाद, निडरता, चतुराई आदि गुणों का परिचय मिलता है। इस तरह हबीब तनवीर ने वजीर अली इस वीरयोध्दा के चरित्र के माध्यम से बच्चों को साहस एवं वीरता का पाठ पढ़ाने की कोशिश की है।

बालमन की जिज्ञासा :

रात को जब बच्चे अपने दादा-दादी, नाना-नानी के पास खुले आकाश के नीचे सोते हुए उनसे कहानियाँ सुनते हैं

। तो उस वक्त अनायास ही उनकी नजर खुले आकाश में चमकते हुए सितारों एवं चाँद पर पडती है । उसे देखकर उनके बालमन में असंख्य प्रश्न एवं जिज्ञासाएँ उत्पन्न होती है। तो कभी-कभी दिन में चमकते सूरज को देखकर उनके मन में ढेर सारे सवाल उत्पन्न होते हैं। अक्सर वे सूरज को देखकर बडे बुजुर्गों से पूछते हैं कि इसका निर्माण कैसे हुआ हैं। सूरज के निर्माण को लेकर अलग-अलग देशों में आज भी वैज्ञानिक तौर पर खोज जारी है। इस अनुसंधान के द्वारा अद्यतन जानकारी सामने आ रही है, किंतु इस के साथ-साथ आज भी ग्रामीण परिवेश में सूरज के निर्माण को लेकर ढेर सारी काल्पनिक कथाएँ एवं किवदंतियाँ मौजूद है। ऐसी ही एक काल्पनिक कथा को लेकर हबीब तनवीर ने आग की गेंद इस बाल नाटक का निर्माण किया है। पांच मिनट के इस नाटक में केवल तीन पात्र है।

अलिफ और बे के मन में जिज्ञासा है कि सूरज क्या है, उसका निर्माण कैसे हुआ होगा? उनके जिज्ञासा के समाधान हेतु जीम उन्हें सूरज की एक पुरानी मजेदार कथा सुनाता है। जीम कहता है कि पुराने जमाने में दुनिया के दो हिस्से थे। एक हिस्से में पहाड थे और दूसरे हिस्से में वादी । पहाडी लोगों के पास आग की गेंद थी। जिससे उन्हें रोशनी मिलती थी। एक दिन वादी में रहनेवाले लोग उस गेंद को चुराते हैं। दोनों में इस गेंद को लेकर झगडा हो जाता है। आखिर में गेंद उडकर आसमान में चली जाती है। अब यह गेंद सूरज बनकर सारी दुनिया को रोशनी देने का महान कार्य करती है। यह केवल एक काल्पनिक कथा है, जिससे बच्चों का मनोरंजन किया गया है। इस मनोरंजन के साथ-साथ सूरज के वास्तविक महत्त्व को भी स्पष्ट किया है। जीम कहता है कि, "सूरज की रोशनी न हो तो न हम जिंदा रह सकते हैं न जानवर न पेड न फल सूरज न हो पानी हवा बिजल तेल कोयला कुछ भी न हो सूरज ही से तो जिंदगी है ।"[3] सूरज के रोशनी के बिना जीवन की कल्पना करना भी असंभव है। सूरज की रोशनी सभी जीवमात्र के लिए आवश्यक है। इस प्रकार हबीब तनवीर ने काल्पनिक कथा के माध्यम से बालमन की जिज्ञासा का चित्रण करते हुए, सूरज के महत्व को विशद किया हैं।

दूध का महत्त्व :

दूध बच्चों के लिए अमृत के समान होता है। उनकी सेहत के लिए दूध अत्यंत लाभदायी है किंतु बच्चे है कि इस बात को समझते ही नहीं । वे दूध से हमेशा मुहमोड लेते हैं। उन्हें तो चाहिए बस बिस्किट और चॉकलेट। दूध के संदर्भ में बच्चों की इस समस्या को लेकर हबीब तनवीर ने दूध का गिलास इस बाल नाटक का लेखन किया है। बिट्टू के सपनों की दुनिया के मंचपर इसे प्रस्तुत किया गया है। दूध में निहित सभी तत्वों को अलग-अलग चरित्र के रुप में दिखाया गया है। शीरीं शक्कर का प्रतीक है, भिक्खू बेगम चर्बी का प्रतीक है, बी प्रोटीन प्रोटीन है, जल्लू आपा पानी का प्रतीक है। कॉल्शियम बानो कॅल्शियम है तथा छोटी-छोटी लडकियाँ नमक का प्रतीक है। दूध में स्थित यह सभी विटामिन्स विट्टू के सपने में आकर उसे दूध का महत्त्व समझाते हैं। साथ ही दूध की एक पुरानी एवं मजेदार कहानी भी उसे सुनाते हैं। शीरी विट्टू को दूध में निहित सभी बिटामिन्स के कार्य को समझाते हुए कहती है कि, "मैं खून पैदा करती हूँ, भिक्खू बेगम चेहरे पर चिकनाई लाती है और बी प्रोटीन हाथ पाँव में ताकद और गोलाई ।..... ये कैल्शियम बानो है उनसे हाडिया मजबूत होते हैं।.... बाकी मुख्तलिफ किस्म के नमक है.....ये दूध में पाए जाते हैं और जिस्म के लिए बहुत मुफीद होते हैं ।"[4] इस तरह दूध में निहित सभी तत्व बच्चों के स्वास्थ के लिए जरुरी है । हबीब तनवीर ने एक नये और अनोखे पध्दति से बच्चों को दूध का महत्त्व समझाने का प्रयास किया है। इस नाटक को देखकर बच्चे निश्चित रुप से दूध को पसंद करने लगेंगे और माँ को खुशी होगी ।

सामाजिक दायित्व का चित्रण :

दिन-प्रतिदिन मनुष्य आत्मकेंद्री एवं स्वार्थी बनता जा रहा है। हर वक्त वह केवल अपने बारें में ही सोचता रहता है। दूसरों का तो उसे खयाल ही नहीं है । अपने लाभ के लिए दूसरों का नुकसान करने लगा है। सामाजिक दायित्त्व एवं कर्तव्य को भूल रहा है। इसीलिए बचपन से ही बच्चों में नैतिकता एवं सामाजिक दायित्त्व की समझ पैदा करना जरुरी है। इस बात को ध्यान में रखते हुए हबीब तनवीर ने चाँदी का चमचा इस नाटक का सृजन किया है। चाँदी का चमचा इस नाटक में एक औरत हर दिन सुबह घर का सारा कूडा-कचरा खिडकी से नीचे डालती है। यह सारा कचरा दुकानदार के सर पर गिर जाता है। दुकानदार हर दिन के उस स्वागत से परेशान है। लेकिन उसे किसी ने देखा नहीं हैं। इसीलिए उसे कुछ कह भी तो नहीं सकते। उसे पकडने के लिए दुकानदार का मित्र एक तरकीब निकालता है, जैसे ही उपर से कचरा गिरता है वह नीचे से आवाज लगाता है अरे कि भाई कचरे में किसी का चाँदी का चमचा नीचे गिरा है। आवाज सुनते ही वह महिला बाहर निकलकर कहती है कि यह मेरा चमचा है गलती से नीचे गिर गया है। महिला चमचा लेने के लिए नीचे आती है, मित्र उसे कहता है कि आपने चमचा तो नहीं डाला, हाँ लेकिन यह कूडा जरुर डाला है, इसे उठाइए । महिला शर्मंदा होकर चुपचाप सारा कुडा उठाती है, मित्र कहता है "घर का कूडा यों सडक पर नहीं फेक देते। नीचे लोक रहते हैं। सडक पर आते जाते हैं। आप की तो सफाई हुई लेकिन सारे मोहल्ले की गंदगी। कूडे के लिए टीम बना है, वहाँ फिंकवा दिया कीजिए।"[5] हम अपना घर तो साफ सुथरा रखना जानते हैं, लेकिन हमारे गली मोहल्लों का क्या । उसे भी साफ रखना हम सब की सामाजिक जिम्मेदारी है। ऐसे निभाना होगा, तभी तो देश स्वच्छ एवं सुंदर बनेगा। हमें अपनी गलतियों का एहसास होना चाहिए। भले ही हमसे गलती हो लेकिन उसके बारें में जब हमें पता चलता है, तो हमें उसे सुधारना चाहिए।

इस प्रकार हबीब तनवीर ने अपने बाल नाटकों के माध्यम से बोल संवेदनाओं को अभिव्यक्त किया है। बालमन की जिज्ञासा का समाधान खोजने की कोशिश की है।

संदर्भ सूची

1. सम्पा. अनुज कुमार, रेखा पाण्डेय, बाल साहित्य और आलोचना, पृ. 16
2. हबीब तनवीर, पचरंगी, पृ. 15
3. वही, पृ. 34
4. वही, पृ. 77-78
5. वही, पृ. 27